BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

पीएम विश्वकर्मा हाट 2026

विश्वकर्मा का अभियान, विकसित भारत का निर्माण

24 जनवरी, 2026

दिल्ली की एक सर्द और सुर्ख सुबह। दिल्ली हाट, आईएनए के द्वार खुलते हैं और शुरुआती आगंतुक आने लगते हैं। **मिस्टर पंचोक पाल्डन** पहले से ही काम पर होते हैं। वे आने-जाने वालों का गर्मजोशी से मुस्कुराकर स्वागत करते हैं। वे **लेह, लद्दाख** के रहने वाले हैं और लकड़ी के एक कुशल कारीगर हैं, जो अपने हाथों से बनी लकड़ी की चीजों को आसानी से सजाते हैं तथा लोगों का ऐसे स्वागत करते हैं जैसे वे जाने-पहचाने चेहरे हों। यह **पीएम विश्वकर्मा हाट** में उनका **दूसरा साल** है। पिछले साल अपनी भागीदारी के दौरान लगभग **2 लाख रूपये** मूल्य की बिक्री दर्ज करने के बाद, वह इस बार और भी अधिक आत्मविश्वास के साथ लौटे हैं। इस बार उनके पास न केवल अपनी कला है, बल्कि इस **प्लेटफॉर्म के जरिए बने जुड़ाव और अपनेपन** का उत्साह भी उनके साथ है।

उनके चारों ओर, हाट धीरे-धीरे जीवंत हो उठता है, लकड़ी पर छेनी की लयबद्ध आवाज हाथ से बुने कपड़ों की हल्की सरसराहट के साथ मिल जाती है। टेराकोटा के बर्तनों की मिट्टी की खुशबू ध्यान से सजाए गए डिस्प्ले से फैलती है। पीएम विश्वकर्मा हाट 2026 सिर्फ एक प्रदर्शनी से कहीं अधिक है; यह एक **जीवंत, जीता-जागता बाजार है जहां भारत की पारंपरिक कलाएं विकसित होती रहती हैं, जुड़ती हैं और नए दर्शकों तक पहुंचती हैं।**

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (एमएसएमई) द्वारा 18 से 31 जनवरी, 2026 तक दिल्ली हाट, आईएनए में आयोजित, यह हाट विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के **117 से अधिक** कारीगरों को एक साथ लाता है। प्रतिदिन सुबह **10:30 बजे से रात 10:00 बजे** तक खुला रहने वाला यह हाट, आगंतुकों को पूरे भारत की कारीगरी का एक शानदार नजारा दिखाता है जो **"विश्वकर्मा का अभियान, विकसित भारत का निर्माण"** की भावना को दर्शाता है। **हाथ से बने उत्पादों** के साथ-साथ, इस हाट में मिट्टी के बर्तन बनाने, चूड़ियां बनाने और गुड़िया बनाने जैसे **लाइव क्राफ्ट प्रदर्शन और सांस्कृतिक कार्यक्रम** भी होते हैं, जो इसे एक पारंपरिक बाजार से कहीं अधिक एक शानदार अनुभव बनाते हैं।

सितंबर 2023 में शुरू की गई **पीएम विश्वकर्मा योजना**, गांवों के पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों को फॉर्मल मार्केट सिस्टम से जोड़कर उन्हें सशक्त बनाने के लिए एक व्यापक पहल के रूप में सामने आई है। यह योजना शुरू से आखिर तक सहायता देती है, जिसमें **पीएम विश्वकर्मा पहचान पत्र** और **सर्टिफिकेट, 500**

रूपये के दैनिक स्टाइपेंड के साथ **कौशल प्रशिक्षण, 15,000 रूपये का मुफ्त टूलकिट**, बिना गारंटी के ऋण तक पहुंच और **डिजिटल लेनदेन** अपनाने के लिए प्रोत्साहन शामिल हैं। वित्तीय और कौशल विकास सहायता के अलावा, यह योजना पीएम विश्वकर्मा हाट जैसे प्लेटफॉर्म के माध्यम से **मार्केट लिंकेज** पर भी जोर देती है, जिससे कारीगर अपने उत्पादों को बड़े राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के सामने प्रदर्शित कर सकें, ब्रांड बना सकें और बेच सकें। इस पहल का सार **"विरासत से विकास"** वाक्यांश में सही ढंग से झलकता है। 22 जनवरी, 2026 तक, इस योजना को चयन के लिए 2.72 करोड़ आवेदन मिले हैं और लगभग **30,000 कारीगरों** को रजिस्टर किया गया है।

हाट के एक कोने में, **उत्तराखंड** के दो कारीगर पास-पास खड़े हैं, उनकी कला की यात्राएं अलग-अलग हैं, फिर भी परंपरा से जुड़ी हुई हैं। **चमोली जिले के श्री दर्शन लाल** ने लकड़ी की नक्काशी में तीन दशकों से अधिक समय लगाया है और बद्रीनाथ मंदिर के निर्माण से जुड़े कारीगरों की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। **जिला-स्तरीय पुरस्कार** और बाद में कारीगरों के लिए **सिल्वर रत्न पुरस्कार** पाने वाले, उन्होंने 2008-09 में अपने उद्यम को औपचारिक रूप से एमएसएमई के तौर पर पंजीकृत करवाया। अपने अनुभव को साझा करते हुए उन्होंने बताया कि "हमें चीजें बनाना आता था," लेकिन विस्तार और बाजार तक पहुंच के अवसर सीमित थे। पीएम विश्वकर्मा योजना के तहत, उन्हें स्किल ट्रेनिंग, एक टूलकिट और सस्ते लोन की सुविधा मिली। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें एक ऐसा प्लेटफॉर्म मिला जिसने उनकी कला को बाजार से बराबरी की शर्तों पर जुड़ने में मदद की। पीएम विश्वकर्मा हाट 2026 दिल्ली में उनकी पहली प्रदर्शनी में भागीदारी है। अपने अनुभव से सीखते हुए, अब वह साथी कारीगरों को इस योजना में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, इसे एक प्रक्रियात्मक जरूरत नहीं, बल्कि विकास के रास्ते के तौर पर देखते हैं।

पास ही, **उत्तरकाशी जिले के श्री विनोद कुमार बांस, बौने बांस और चीड़** से बनी कई तरह की चीजें दिखाते हैं। जहां चीड़ का काम उनका पुश्तैनी पेशा है, वहीं उन्होंने धीरे-धीरे बांस का काम भी शुरू किया, जो परंपरा और नए बदलावों के बीच संतुलन दिखाता है। उन्होंने 2008 में अपना काम शुरू किया और 2022 में इसे एमएसएमई के तौर पर पंजीकृत करवाया। आज, विनोद उत्तराखंड के **13 जिलों में कारीगरों** को प्रशिक्षण देने के लिए सीधे प्रशिक्षक रखते हैं। इस तरह की प्रदर्शनियों में बिक्री आमतौर पर 40,000 से 50,000 रूपये के बीच होती है; हालांकि, इसका बड़ा असर सिर्फ तुरंत होने वाली कमाई से कहीं अधिक है। उनका उद्यम एक उत्प्रेरक के रूप में काम करता है, जहां एक व्यक्ति की सफलता कई दूसरों के लिए कौशल विकास और रोजगार के अवसर पैदा करती है। पीएम विश्वकर्मा योजना से मिले समर्थन, जिसमें प्रशिक्षण और औजार शामिल हैं, उनके काम से पता चलता है कि कैसे **उद्यमिता का विकास** बड़े **समुदाय को सशक्त** बना सकता है।

असम के धुबरी की सुश्री ज्योत्सना पॉल के लिए, टेराकोटा विरासत में मिली परंपरा और क्रिएटिव इनोवेशन दोनों को दिखाता है। अपने परिवार के बिजनेस में शामिल होने के बाद, उन्होंने 2020 में इसे एक एमएसएमई के तौर पर पंजीकरण करवाया। तब से, सरकार के समर्थन वाले प्लेटफॉर्म ने उन्हें अपने होमटाउन से बहुत दूर के बाजारों तक पहुंचने में मदद की है, जिसमें **असम, वाराणसी, नोएडा और अब दिल्ली** के मेले शामिल हैं। **स्टेट एनआरएलएम मिशन, कपड़ा मंत्रालय, एमएसएमई मंत्रालय** और एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल के जरिए मिले इनविटेशन ने जोखिम को काफी कम किया और बड़े पैमाने पर भागीदारी को बढ़ावा दिया, जिसमें यात्रा, रहने और खाने का खर्च शामिल था। ऐसी प्रदर्शनियों में बिक्री आमतौर पर 20,000 से 30,000 रूपये के बीच होती है और अकेले पीएम विश्वकर्मा हाट 2026 में, उन्होंने पहले ही 15,000 से 20,000 रूपये की बिक्री दर्ज की है। तुरंत **मुनाफे से कहीं अधिक** यह हाट उन्हें **निरंतर वापस आने** का एक प्लेटफॉर्म, **अपनी कला को बेहतर बनाने** और धीरे-धीरे अपने **मार्केट में अपनी मौजूदगी** बढ़ाने का मौका देता है।

केरल के **श्री सुधीश वी डी,** बारीकी से तराशी गई एक मजबूत डिजिटल मौजूदगी सहित लकड़ी की कलाकृतियां दिखाते हैं। अपने फिजिकल स्टॉल के साथ-साथ, वह एक इंस्टाग्राम पेज भी एक्टिव रूप से मैनेज करते हैं, जो पारंपरिक कारीगरी को ऑनलाइन पहुंच से प्रभावी ढंग से जोड़ता है। वर्ष 2024 में एमएसएमई के तौर पर पंजीकृत होने के बाद, उन्हें 5 प्रतिशत की रियायती ब्याज दर पर 3 लाख रूपये तक का **बिना गारंटी वाला ऋण** मिला, जो पारंपरिक बैंक ऋण दरों से काफी कम है। उन्हें 15,000 रूपये की कीमत का एक फ्री टूलकिट भी मिला। ऐसी प्रदर्शनियों में, उनकी बिक्री शायद ही कभी 20,000 रूपये से कम होती है। उनके जैसे कारीगरों के लिए, बाजार अब भूगोल तक सीमित नहीं है, क्योंकि **डिजिटल प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन पेमेंट और बार-बार आने वाले ग्राहक** उनकी कला की पहुंच को फिजिकल बाजार से कहीं आगे तक ले जाते हैं।

दिल्ली हाट में लगातार अधिक संख्या में लोगों के आने की वजह से यह इस तरह की प्रदर्शनी के लिए एक रणनीतिक रूप से फायदेमंद जगह है। यहां डिस्प्ले पर रखे गए उत्पाद में बहुत अधिक वैरायटी है, जिसमें कश्मीरी कुर्तियों से लेकर 6.5 फीट से अधिक ऊंची, बारीकी से तराशी हुई पत्थर की मूर्तियां शामिल हैं।

मिनिस्ट्री-ब्रांडेड शॉपिंग बैग, जो कई साइज में मिलते हैं, कारीगरों के लिए **पैकेजिंग का खर्च कम** करने में मदद करते हैं और साथ ही हाट के लिए मोबाइल प्रमोशनल टूल का भी काम करते हैं।

हर स्टॉल पर एमएसएमई मंत्रालय द्वारा जारी एक **प्लेकार्ड** भी लगा है, जो आगंतुकों को कारीगर के बारे में पारदर्शी और भरोसेमंद जानकारी देता है, जिसमें नाम, रहने की जगह, संपर्क सूत्र, एंटरप्राइज का प्रकार, मासिक उत्पादन क्षमता और बल्क या कस्टमाइज्ड ऑर्डर लेने की इच्छा शामिल है। यह मामूली सी दिखने वाली सुविधा एक अस्थायी स्टॉल को प्रभावी ढंग से एक प्रोफेशनल **माइक्रो-एंटरप्राइज इंटरफेस** में बदल देती है, जिससे भरोसा बढ़ता है और बार-बार लेन-देन और **स्थायी मार्केट लिंकेज** में आसानी होती है।

कारीगरों के बीच जागरूकता का स्तर भी उतना ही खास है। वे सरकारी योजनाओं और उनसे जुड़े फायदों के बारे में साफ समझ रखते हैं, जिसमें पीएम विश्वकर्मा और संबंधित पहलों के तहत किफायती क्रेडिट तक पहुंच, पारंपरिक बैंक लोन की तुलना में रियायती ब्याज दरें और प्रशिक्षण, औजारों के लिए वित्तीय सहायता सहित एक समन्वित स्वरूप शामिल है। लेन-देन के पसंदीदा तरीके के रूप में **यूपीआई को बड़े पैमाने पर अपनाना** ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती **डिजिटल साक्षरता** और **औपचारिक बैंकिंग सेवाओं** की बढ़ती पहुंच को भी दर्शाता है।

ये मेले इसलिए सफल होते हैं क्योंकि कारीगर वापस आना पसंद करते हैं। इसमें हिस्सा लेना एक बार का मौका नहीं माना जाता, बल्कि एक भरोसेमंद और काम करने वाले इकोसिस्टम का हिस्सा माना जाता है, जिसे कारीगर पहचानते हैं और जिस पर भरोसा करते हैं। यहां शासन संबंधी प्रक्रियाओं या कागजात से नहीं, बल्कि ऐसे ठोस नतीजों से दिखाई देती है जो सीधे तौर पर आजीविका का समर्थन करते हैं। सामूहिक रूप से, ये नतीजे जमीनी स्तर पर भरोसा बनाकर, **आत्मनिर्भर भारत** के तहत आजीविका को मजबूत करके और समावेशी, बाजार से जुड़े विकास के जरिए **विकसित भारत@2047** के लक्ष्य को लगातार आगे बढ़ाकर सरकार के **"सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास"** के बड़े विकास विजन का समर्थन करते हैं। जैसे-जैसे शाम होती है और रोशनी कम होने लगती है, आगंतुक रुके रहते हैं। काउंटरों पर बातचीत जारी रहती है, और हाथ कपड़े, लकड़ी, मिट्टी और पत्थर पर सोच-समझकर घूमते हैं, उनका वजन, बनावट और भरोसे को परखते हैं। **पीएम विश्वकर्मा हाट 2026** तुरंत बदलाव का वादा नहीं करता। इसके बजाय, यह कुछ **अधिक टिकाऊ चीज यानी पहुंच, पहचान और सम्मान** देता है। इस हाट में, इतिहास और संस्कृति को शीशे के पीछे सहेजकर नहीं रखा जाता; वे जीवित हैं, कुशल हाथों से आकार लेते हैं, नीतिगत समर्थन से मजबूत होते हैं और उन लोगों के साथ खुले तौर पर साझा किए जाते हैं जो रुकने, देखने और जुड़ने को तैयार हैं।

संदर्भ

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय

https://pmvishwakarma.gov.in/

https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2215839&reg=3&lang=2

पीआईबी शोध

पीके/केसी/एसकेएस